प्रश्न - ८

१. श्रावक को कर्मादान का त्याग करना चाहिए, कारण कि कर्मादान से कर्मों का बहुत ही बड़ा जथ्था आत्मा में प्रवेश करता है और कर्मादान से बहुत सारे जीवों का घात हो जाता है। यदि कर्मादान का सम्पूर्ण त्याग संभव नहीं होता है तो इसकी मर्यादा निश्चित जरूर करना चाहिए और समय आने पर इसका भी त्याग करकर जीवन को निर्मल बनाना चाहिए। भवोभव में, अनार्य देश में, पैसा कमाने की लालच से, जीव ने अनेक बार कर्मादान में उद्यम किया है और इससे इस जीव ने चार गतिमय संसार में अनेक बार परिभ्रमण किया है फिर भी इसका अंत आया नहीं। अब यदि इस दुःखमय संसार में से बाहर निकलना हो तो हमें सावध रहकर अनावश्यक कर्मादान का त्याग जरूर करना चाहिए।

२. भरत क्षेत्र में मागध, वरदाम और प्रभास तीर्थ हैं। चक्रवर्ती छः खंड पर विजय पाने के बाद मागध तीर्थ के पास पडाव डालकर अट्ठम तप की आराधना करते हैं। फिर चार घोडों के रथ में बैठकर पानी में जा सके वहाँ तक जाते हैं फिर अपने नाम-वाला बाण वे मागधद्वीप पर छोडते हैं। वो अधिपति के देवसभा में जाकर पडता है। पहले तो तीर्थाधिपति कोपायमान होता है फिर चक्रवर्ती का नाम पढ़कर शांत हो जाता है, बाण और नजराना लेकर चक्रवर्ती के पास जाता है। हाथ जोडकर चक्रवर्ती की आज्ञा शिरोमान्य करके कहता है "मैं आपके क्षेत्र में रहनेवाला देव हूँ, आपकी आज्ञा में हूँ, आपकी आज्ञा शिरोमान्य है।" चक्रवर्ती अपनी आज्ञा स्थापित करके देव को विदाई देता है। इस तरह अन्य दो तीर्थो में भी अपनी आज्ञा स्थापित करता है।

३. श्री शांतीनाथ भगवान के वंदन के लिये जो देवता और असुर आ रहे थे वो श्रेष्ठ विमान और दिव्य सुवर्णमय रथ और सैकडों घोडों के साथ शीघ्र गती से आ रहे थे जिसके कारण उनके कान के कुंडल, बाजुबंध और मुकुट क्षोभ पाकर डोल रहे थे और वो सब अपने की बैखूलि से मुक्त और भक्ति से युक्त थे। वो सब शिघ्रता से इकट्ठे हुए और बहुत आश्चर्य से चकित थे। सर्व सैन्य परिवार से युक्त थे। उनके अंग उत्तम जाति के सुवर्ण और रत्नों से बने प्रकाशित अलंकारो द्वारा दैदिप्यमान थे, शरीर भक्तिभाव से झुके हुए थे और दो हाथ अंजलि पूर्वक जोडकर मस्तक से प्रणाम कर रहे थे। ऐसे सुर-असुरों के संघ जो जिनेश्वर प्रभु को वंदना करके, स्तवना करके, तीन बार प्रदक्षिणा देकर फिर से प्रणाम करके अत्यंत हर्षपूर्वक स्वयं के भवनों में वापस जाते थे।

४. व्यापार के लेनदेन में यदि अपना द्रव्य अपने हाथ न चढ़ा, वह यदि सर्वथा आने जैसी परिस्थिति न दिखाई दे तो ऐसा ही नियम कर लेना कि मेरा यह लेना धर्मखाते है। इसलिये श्रावक ने बहुधा साधर्मिक भाईयों के साथ ही व्यापार करना चाहिए क्योंकि कदाचित उनके पास धन रह जाय तो भी वह श्रावक धर्ममार्ग में ही वापरेगा याने खुद ही वापरने जैसा होगा। अतः धर्म मार्ग में खर्चा ऐसा आशय रखकर पीछे हट जाना। कदाचित किसी म्लेच्छ के पास लेना रह जाय तो भी वह धर्मखाते डाल देना और अपने मृत्यु के समय वोसिरा देना चाहिए। जिससे वह पापराशि का भार उसे न लगे।

५. शरीर के अंग और उपांग को प्रदान करनेवाला कर्म अंगोपांग नामकर्म कहेलाता है। जिस कर्म से औदारिक शरीर रूप परिणाम पाये पुद्गलों में से औदारिक शरीर योग्य अंग, उपांग और अंगोपांग के स्पष्ट विभाग रूप परिणाम होता है वह औदारिक अंगोपांग नामकर्म है। जिस कर्म के उदय से वैक्रिय शरीर रूप परिणाम पाये पुद्गलों में से वैक्रिय शरीर योग्य अंग, उपांग और अंगोपांग के स्पष्ट विभाग रूप परिणाम होता है वह वैक्रिय अंगोपांग नामकर्म है। जिस कर्म के उदय से आहारक शरीर रूप परिणाम पाये पुद्गलों में से आहारक शरीर योग्य अंग, उपांग और अंगोपांग के स्पष्ट विभाग रूप परिणाम होता है वह आहारक अंगोपांग नामकर्म है।

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय द्वितीय वर्ष

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ अभ्यास - 7

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर

विद्यार्थी का नाम डिसेंबर -2019 उत्तरपत्रिका

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	श्री. अकंपित स्वामी
(२)	आगमी
(३)	आहारक
(४)	करिकूट
(५)	सम्यक्त्व मोहनीय
(६)	उपघात
(७)	औदारिक शरीर की
(८)	वैताढ्य पर्वत के
(९)	भोगोपभोग
(१०)	जाति कर्म
(११)	पादपोपगमन
(१२)	ऋषभकूट
(१३)	औदारिक
(१४)	सत्यमार्ग
(१५)	लेजस - कार्मण
(१६)	नारकी
(१७)	गगनवल्लभ
(१८)	सडसठ
(१९)	को रंगरोगान
(२०)	सज्जनों के साथ

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	शाल्मलिकूट
(२)	पंदरह कर्मदान
(३)	अध्यापक का
(४)	श्री. शांतिनाथ
(५)	ह्रीकूट, ह्रीरसकूट
(६)	गाली
(७)	रसवाणिज्य
(८)	पहले फूल
(९)	विद्यादेवियों
(१०)	द्रव्येन्द्रिय
(११)	कर्मदान
(१२)	बंधन नामकर्म
(१३)	चाकर बनकर भी
(१४)	मिथिला नगरी
(१५)	मोक्ष
(१६)	खेतीवाडी
(६)	मिश्र
(७)	ऋषभकूट
(८)	धुंगारा
(९)	अन्य तीन
(१०)	वैक्रिय
(११)	मनोहर तिलक
(१२)	लिक सो वे
(१३)	पंचेन्द्रिय
(१४)	शेष
(१५)	स्तवना करके
(१६)	वैताढ्य
(१७)	घास के समुह
(१८)	सपाट प्रदेश
(१९)	बाजुबंध
(२०)	पूर्ण रखते हुअे

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	वेग से
(२)	बने हुअे
(३)	मिलता है
(४)	दो भुजा

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	9	(६)	1
(२)	8	(७)	5
(३)	6	(८)	2
(४)	3	(९)	7
(५)	10	(१०)	4

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	9 वर्ष
(२)	8
(३)	15
(४)	26
(५)	आधे गाऊ
(६)	उन्नीस लाख सो
(७)	3520
(८)	5
(९)	18
(१०)	15

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	16
(२)	×	(२)	5
(३)	✓	(३)	12
(४)	✓	(४)	2
(५)	×	(५)	18
(६)	✓	(६)	22
(७)	✓	(७)	8
(८)	×	(८)	17
(९)	×	(९)	7
(१०)	✓	(१०)	24

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________